ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता

संतोष नागरे

हिंदी विभाग,

र.भ.अट्टल महाविद्यालय, गेवराई

आधुनिक हिंदी कविता का आरंभ भारतेंदु युग से होता है। आधुनिक हिंदी कविता मध्यकाल के भक्ति और श्रंगार के प्रभाव से धीरे -धीरे मुक्त होकर जन - जीवन की ओर अग्रसर होती हुई दिखाई देती है। सन 1857 से लेकर 1947 तक लिखी गयी हिंदी कविता में जहाँ एक ओर समाज सुधार की भावना है वहीं दूसरी ओर अंग्रेजों की गुलामी के विरूद्ध मुक्ति का शंखनाद भी है। डॉ. मधु धवन इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं - " इस युग के राष्ट्रीय - सांस्कृतिक काव्य में दो भावनाएँ पूरी शक्ति के साथ व्यक्त हुई - पहला कवियों ने भारत की आंतरिक स्थिति का चित्र खींच सुधार की ओर ध्यान खींचा। दूसरा अंग्रेजी सत्ता के प्रति मुक्ति का नारा लगाया।"[1] भारतेंदु हरिश्चंद्र,मैथिलीशरण गुप्त, गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' उर्फ 'त्रिशूल', सोहनलाल द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, रामधारीसिंह दिनकर, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आदि कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन को जनता तक पहुँचाकर जनजागरण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। जन-जागरण के संदर्भ में डॉ. हर्ष- नारायण नीरव कहते हैं -" जन -जागरण एक व्यापक आशय का संदर्भ है और उसका मूल प्रसंग भारत के मुक्ति - प्रयास या भारत की स्वतंत्रता के लिए विभिन्न आयामों की आंदोलन - प्रक्रिया में गर्भित है। जागरण और जनवर्ग, जीवन और समाज, देश - प्रान्त और इन विभिन्न प्रसंगों के विविध आयामों में समन्वय, एकता व अखण्डता का अनुष्ठान और जागरण मूलतः ये ही जन - जागरण के प्रमुख पक्ष है।"[2]

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

स्वाधीनता आंदोलन को जन सामान्य तक पहुँचाने और उसे सक्रियता प्रदान करने में जिन कवियों का महत्वपूर्ण योगदान है उसमें गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' प्रमुख है। आपने 'त्रिशूल' उपनाम से राष्ट्रीय भावनाओं को लेकर सशक्त कविताएँ लिखी। जिसमें देश -प्रेम की भावना न हो उस मनुष्य को वे मृतक समान मानते हैं। 'त्रिशूल' कहते हैं -

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है
वह नर नहीं, नर -पशु निरा है और मृतक समान है।"[3]

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

सन 1857 के बाद अंग्रेजों ने इस देश में अपनी सत्ता स्थापित की। अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए अंग्रेजों ने 'फूट डालो-राज करो' की नीति अपनायी। इस नीति के तहत उन्होंने जाति, धर्म, भाषा, साम्प्रदायिकता का जहर फैलाकर सामाजिक स्वास्थ और देश की एकता एवं अखंडता को खंडित किया। अंग्रेजों की इस कूटनीति का पर्दा -फाश करते हुए सभी भारतीयों को आपसी भेदभाव मिटाकर एक साथ मिलकर लड़ने का संकल्प करते हुए रूपनारायण पांडेय कहते हैं -

"जैन, बौद्ध, पारसी, यहूदी, मुसलमान सिख, ईसाई
कोटि कंठ से मिलकर कह दो, हम सब भाई -भाई।"[4]

समाज को खंडित कर देश की आर्थिक लूट करनेवाली जुल्मी अंग्रेजी व्यवस्था के विरूद्ध सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आवाज उठाते हैं। देश की आर्थिक लूट करनेवाले गोरों को चोर कहकर फटकारते हुए 'निराला' कहते हैं -

"चूम चरण मत चोरों के तू,
गले लिपट मत गोरों के तू।"[5]

सन 1920 के बाद स्वाधीनता आंदोलन को महात्मा गांधी ने एक नयी दिशा दी। सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वदेशी, बहिष्कार जैसे अस्त्रों को लेकर महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम लड़ा गया। महात्मा गांधी के पथ पर चलते हुए भारतमाता को स्वतंत्र करने जा रहे सत्याग्रहियों की धीर, वीर और मस्तानों की सेना का यथार्थ चित्रण करते हुए सोहनलाल द्विवेदी 'सत्याग्रह' कविता में कहते हैं -

" आज चली है सेना फिर से
धीर वीर मस्तानों की
आजादी के दीपक पर है
भीड़ लगी परवानों की।
सत्याग्रही बने वह जिस का
देश प्रेम से नाता हो
अपने प्राणों से भी प्यारी
जिसको भारत माता हो।"[6]

स्वाधीनता आंदोलन को धार देनेवाली कवयित्री के रूप में सुभद्राकुमारी चौहान को जाना जाता है। अपने पति के साथ सुभद्राकुमारी चौहान स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रही। इस सक्रियता के कारण उन्हें कई बार जेल की यात्राएँ भी करनी पड़ी। आपकी 'वीरों का कैसा हो वसंत' तथा 'झाँसी की रानी' कविताओं में राष्ट्रीयता और स्वाधीनता की भावना अपने चरम रूप में दिखाई देती है। स्वाधीनता आंदोलन में 'झाँसी की रानी' कविता के महत्वपूर्ण योगदान को अधोरेखित करते हुए कांतिकुमार जैन कहते हैं - "यह कविता राष्ट्र के दीवानों के बीच बड़ी लोकप्रिय थी। झाँसी और जबलपुर के गली -कूचों में यह कविता जितनी गूँजी, उतनी कोई दूसरी नहीं। इसकी लोकप्रियता की तुलना केवल मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' से की जा सकती है। ये वे दिन थे जब हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा और हिंदी क्षेत्र का राष्ट्रीय वातावरण सुभद्रामय हो रहा था।"7 देश की जनता को स्वाधीनता आंदोलन की लड़ाई लड़ने की प्रेरणा देनेवाली मर्दानी 'झाँसी की रानी' की शौर्यगाथा को सश्रद्ध याद करती हुई सुभद्राकुमारी चौहान कहती है -

" महलों ने दी आग झोपड़ी ने ज्वाला सुलगायी थी
यह स्वतंत्रता की चिंगारी, अंतरतम से आयी थी।
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचायी थी
जबलपुर, कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"[8]

स्वाधीनता आंदोलन के इस दौर में उपेक्षित विषयों को लेकर सशक्त रचनाएँ लिखी गयी। राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी की 'पुष्प की अभिलाषा' इस दृष्टि से महत्वपूर्ण कविता है। प्रस्तुत रचना में मनुष्य के साथ -साथ प्रकृति भी स्वाधीनता

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

आंदोलन के लिए संघर्षरत दिखाई देती है । पुष्प अपने क्षणभंगुर जीवन की सार्थकता सुरबाला के गहनों में, प्रेमी माला में, सम्राटों के शव और देवों के सिर पर चढ़कर अपने भाग्य पर इतराने की अपेक्षा मातृभूमि के लिए अपना जीवन समर्पित करनेवाले वीरों के पैरों तले कुचले जाने में मानता है । पुष्प की आत्मबलिदान की भावना को लेकर माखनलाल चतुर्वेदी कहते हैं -

" मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ पर जावें वीर अनेक।"[9]

राष्ट्रभाषा की उपेक्षा कर कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता । राष्ट्रभाषा राष्ट्र की अस्मिता एवं एकता की प्रतीक होती है । स्वाधीनता आंदोलन को जन सामान्य तक पहुँचाने के लिए सभी स्वतंत्रता सेनानियों एवं समाज सुधारकों ने राष्ट्रभाषा हिंदी का आधार लिया । 'चले जाव', 'करेंगे या मरेंगे', 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा', 'इंकलाब जिंदाबाद' जैसे स्लोगन स्वाधीनता आंदोलन में राष्ट्रभाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका को अधोरेखित करते हैं । भारतेंदु हरिश्चंद्र इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं -

" निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिये को सूल ।
अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन ।"[10]

'वसुधैव कुटुम्बकम' भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की आत्मा है । विविधता में एकता भारत की पहचान है । इस पहचान को मिटाने और अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के श्रेष्ठत्व के लिए अंग्रेजों द्वारा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की उपेक्षा की गयी । राष्ट्रकवि दिनकर की कविताओं में जहाँ एक ओर अतीत के वैभव का गुणगान है वहीं दूसरी ओर राष्ट्र की दुरावस्था भी व्यंजित हुई है । अवध के राम, वृंदावन के घनश्याम, मगध के चंद्रगुप्त, सम्राट अशोक तथा विश्व को शांति और अहिंसा का संदेश देनेवाले गौतम बुद्ध को सश्रद्ध याद करते हुए दिनकर 'हिमालय' कविता में कहते हैं -

" तू पूछ, अवध से राम कहाँ ?
वृंदा ! बोलो घनश्याम कहाँ !
ओ मगध ! कहाँ मेरे अशोक ?
वह चंद्रगुप्त 'बलधाम' कहाँ ?
पैरों पर ही पड़ी हुई,
मिथिला भिकारिणी सुकुमारी ।
तू पूछ, कहाँ इसने खोई,
अपनी अनंत निधियाँ सारी ।
री कपिलवस्तु ! कह बुद्धदेव के
मंगल उपदेश कहाँ ?
तिब्बत, इरान, जापान, चीन
तक गये हुए संदेश कहाँ ?"[11]

सारांश:

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सन 1857 से लेकर 1947 तक लिखी गयी हिंदी कविता में देश की दुर्दशा, सामाजिक सुधार, अतीत के गौरव गान, आत्मबलिदान की भावना, देश की एकता एवं अखंडता, अंग्रेजी सत्ता से मुक्ति और देश की स्वाधीनता की संघर्षयात्रा के विभिन्न पड़ावों का यथार्थ चित्रण है ।

संदर्भ:

1. हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, सम्पा. डॉ. मधु धवन, पृ.68
2. रचनाकार दृष्टि और दिशायें, डॉ. हर्षनारायण नीरव, पृ. 68-69
3. हिंदी कविता में युगांतर, प्रो. सुधीन्द्र , पृ.252
4. आधुनिक हिंदी कविता, डॉ. हरदयाल, पृ.37

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

5. निराला और दिनकर की काव्य चेतना, डॉ. रजनी शिखरे, पृ.99
6. हिंदी साहित्य विविध प्रसंग, मत्स्येंद्र शुक्ल, पृ. 115
7. समय संस्मरणों में (चर्चित संस्मरणों का विशिष्ट संग्रह) कांतिकुमार जैन, चयन एवं संपादन, डॉ. छबिल कुमार मेहेर, पृ. 33
8. http://hindwi.org.in Dated 16-01-2024, 10.18 AM
9. काव्य इन्द्रधनु, सम्पा. डॉ.शिवाजी सांगोले तथा अन्य, पृ. 48
10. काव्य कुसुम, सम्पा. हिंदी अध्ययन मंडल डॉ. बा. आ. म. वि. औरंगाबाद, पृ.21
11. आधुनिक हिंदी कविता, डॉ. हरदयाल, पृ. 85

Cite This Article:

नागरे स. (2024). *स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 118–121) **EIIRJ.** https://doi.org/10.5281/zenodo.10648781